अवधेश कुमार आशुतोष

जन्मतिथि- 20.10.1965
जन्मस्थान - खगड़िया
पिता का नाम- स्व० रामदेव पंडित राजा
माता का नाम- स्व० चंद्रावती देवी
मोबाइल नम्बर - 6204506598

दिन भर मन जो भी करे, निपटा लें हर काम।
संध्या में वंदन करें, निशि में हो विश्राम।।
निशि में हो विश्राम, रात में हल्का खाकर।
पौष्टिक भोज्य सुपाच्य, नींद अच्छी गुण आगर।।
जीवन जड़ अध्यात्म, परा के प्रति है हितकर।
बिना किए विश्राम, सूर्य भी तपता दिन भर।।

****

धर्म सनातन से बना, मेरा देश महान।
जन्मे हैं इस देश में, राम कृष्ण भगवान।।
राम कृष्ण भगवान, हमें सिखलाते जीना।
रखकर हृदय विराट, घूँट कड़वा भी पीना।।
भरे पड़े हैं ज्ञान, दे गए पुरुष पुरातन।
सबको देता मान, हमारा धर्म सनातन।।

****

जैसी होगी भावना, वैसी होगी बुद्धि।
तीव्र बुद्धि के हेतु हो, अपने चित की शुद्धि।।
अपने चित की शुद्धि, अहं तजने से होती।
वारे जब सर्वस्व, बने गंगा-सी सोती।।
बिना गलाए गर्व, अर्चना हरि की कैसी?
दिखती कहीं न भक्ति, हमें मीरा के जैसी।।

****

फूली सरसों खेत में, आते मदिर वसंत।
कुसुमित पीत पराग से, महमह वायु दिगंत।।
महमह वायु दिगंत, करे मन को मतवाला।
मधुशाला जा लोग, मस्त ज्यों हो पी हाला।।
घोले ऋतुपति भांग, रंग भरता ले तूली।
फूल सरिस ही देख, उमंगें मन की फूली।।

****

फूली सरसों खेत में, बौरे मधुक रसाल।
आया देख वसंत है, गाती कोयल डाल।।
गाती कोयल डाल, प्रेम के मदिर तराने।
फूलों पर अलि वृंद, लगे देखो मँडलाने।।
विरहन को क्यों माघ, चढ़ा देता है शूली।
वहीं फिरे पति संग, बहू खुशियों से फूली।।

****

परिवर्तन के दौर से, गुजर रहा है हिन्द।
निखर रहा है नित्य ही, फूलों के मानिन्द।।
फूलों के मानिन्द, महक छवि शोभा देता।
बना हुआ है हिन्द, विश्व का आज चहेता।।
भू से लेकर चाँद, तलक इसका है नर्तन।
रामराज्य साकार, करेगा यह परिवर्तन।।

****

जानेगा केवल वही, चौथेपन की पीर।
वृद्धाश्रम में फट रहा, जिनका जीवन चीर।।
जिनका जीवन चीर, फटा वर्षों से गंदा ।
सच में उसका भाग्य, हुआ है कलुषित मंदा।।
उनसे रूठा भाग्य, उन्हें पीड़ा ही देगा।
कितना सहता पीर, मात्र ईश्वर जानेगा।।

****

सुनना चाहे लोग क्यों, चिकनी चुपड़ी बात।
सत्य सदा कड़वा लगे, दवा तुल्य ही भ्रात।।
दवा तुल्य ही भ्रात, सत्य है पर गुण आगर।
जैसे हृद में रत्न, छुपा रखता है सागर।।
कभी लगाकर ध्यान, बात यह मन में गुनना।
खड़ी खड़ी सच बात, ध्यान से हरदिन सुनना।।

****

आए दिन मधुमास के, बौरा गया अनंग।
जिस-तिस पर शर दे चला, जीव चकित सब दंग।।
जीव चकित सब दंग, उमंगें हैं ये कैसी।
कलतक थे सामान्य, दशा क्यों मन की ऐसी।।
काम बाण से विद्ध, लोग के मन ललचाए।
मधुर मिलन के आज, सुहाने दिन हैं आए।।

****

आया अंत वसंत का, कहाँ सामयिक बात?
यह वैसा ही है सखे, दिन को कहना रात।
दिन को कहना रात, शुरू को अंत बताना।
जब खिलतें हो फूल, उसे पतझड़ बतलाना।।
पूजा थी गत वार, शारदे की शुभ छाया।
कल से ही मधुमास, वसंती मौसम आया।

****